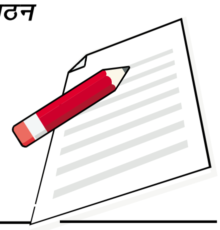

13

301hi13

सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’

हिंदी साहित्य जगत में सूर्यकांत त्रिपाठी ‘निराला’ का महत्त्वपूर्ण स्थान है। निराला जिस युग में कविता लिख रहे थे, उस युग में भारतीय समाज अनेक प्रकार के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों से गुज़र रहा था। पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा किए जा रहे शोषण को देखकर निराला बहुत बेचैन होते थे। उनकी अनेक रचनाओं में यह बेचैनी और पीड़ा झलकती है। ‘वह तोड़ती पत्थर’ कविता में भी श्रमिक नारी के जीवन और उसके प्रति समाज की हृदयहीनता का अंकन किया गया है।

निराला का अपना जीवन भी कष्ट भोगते हुए बीता। उसमें सुख-आनंद की लहरें कुछ ही दिनों के लिए आईं, जिनकी स्मृति के सहारे ही उन्होंने शेष जीवन बिताया। ‘मौन’ कविता में कवि अपने प्रिय के साथ कुछ समय चुपचाप बिताना चाहता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- ‘वह तोड़ती पत्थर’ कविता के आधार पर श्रमिक के कठोर जीवन पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- शोषक और शोषित के जीवन की विषमताओं का विवेचन कर सकेंगे;
- ‘मौन’ कविता के आधार पर अपने प्रिय पात्र के साथ कुछ घड़ी मौन बिताने के आनंद का उल्लेख कर सकेंगे;
- कविताओं की भाषा-शैली और शिल्प-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप 1

क्या आप कभी प्रचंड गरमी में बाहर निकले हैं ? शहरों में मध्यवर्ग के लोग गरमी में पंखा, कूलर जैसे उपकरणों के साथ घरों के भीतर बंद रहना पसंद करते हैं। कार्यालयों में भी ऐसी ही सुविधाएँ चाहते हैं, जिनके लिए ऐसी सुविधाएँ संभव नहीं होती, वे भी कम-से-कम नीम, पीपल, जामुन जैसे किसी छायादार पेड़ के नीचे बैठकर गरमी के दिन बिताना चाहते हैं।

ऐसी आग बरसाती गरमी में खुली सड़क पर काम कर रहे किसी श्रमिक को देखिए। सोचिए, वह ऐसी प्रचंड गरमी में भी क्यों काम करता है ? विश्राम क्यों नहीं करता ? यदि वह काम न करे तो क्या होगा ? अपने विचार यहाँ लिखिए:

....

....

....

13.1 मूलपाठ

आइए, निराला की दो कविताओं का आनंद लें

1. वह तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर –
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार –
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,

रूई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गयीं,
प्रायः हुई दुपहर –
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,

शब्दार्थ

नत-नयन – झुकी आँखें
गुरु – भारी
तरुमालिका – पेड़ों की पक्तियाँ
अट्टालिका – ऊँचे भवन
प्राकार – परकोटा
दिवा – दिन
लू – तेज गर्म हवा
भू – प थ्वी, ज़मीन
गर्द-चिनगीं – चिंगारी जैसे धूल के कण
छिन्नतार – तारों की झनकार

टिप्पणी

देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा –
'मैं तोड़ती पत्थर।'

2. मौन

बैठ लें कुछ देर,
आओ, एक पथ के पथिक से
प्रिय, अन्त और अनन्त के,
तम-गहन-जीवन घेर।
मौन मधु हो जाय
भाषा मूकता की आड़ में,
मन सरलता की बाढ़ में
जल-बिंदु-सा बह जाय।
सरल, अति स्वच्छन्द
जीवन, प्रात के लघु-पात से
उत्थान-पतनाघात से
रह जाए चुप, निर्द्वन्द्व।

शब्दार्थ

सुघर – सुडौल देहवाली
सीकर – पसीने की बूँदें
तम – अंधकार
गहन – गहरा
मधु – आनंद
मूकता – चुप्पी
स्वच्छंद – मुक्त, स्वतंत्र
पतनाघात (पतन+आघात) – गिरना और चोट लगना
निर्द्वन्द्व (निः + द्वन्द्व) – द्वन्द्वरहित, तनाव मुक्त, स्थिर

13.2 बोध प्रश्न

उपर्युक्त दोनों कविताओं को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. पहली कविता में 'श्याम तन, भर बँधा यौवन' पंक्ति में किसकी बात कही जा रही है?
2. पहली कविता में किस प्रकार के मौसम का वर्णन है?
3. पत्थर तोड़ने वाली जहाँ बैठी थी, उसके सामने क्या दृश्य था?
4. कवि कुछ देर साथ बैठने का आग्रह किससे कर रहा है ?

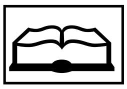

13.3 आइए समझें

कविता - 1 'वह तोड़ती पत्थर'

संदर्भ

'वह तोड़ती पत्थर' कविता छायावाद के प्रमुख कवि निराला द्वारा रचित है। यह उनके

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के
पथ पर –
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई
स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार –
सामने तरु-मालिका
अट्टालिका, प्राकार।

कविता-संग्रह 'अनामिका' में संकलित है। सर्वप्रथम यह कविता 'सुधा' मासिक पत्रिका में मई 1937 में प्रकाशित हुई थी।

प्रसंग

कविता पढ़कर आप पहले जान चुके हैं कि यह एक श्रमिक नारी पर लिखी गई है, जो सड़क के किनारे पत्थर तोड़ रही है। कवि ने उसे इलाहाबाद की किसी सड़क पर काम करते देखा है। उसी का चित्र उन्होंने यहाँ खींचा है।

व्याख्या

काव्यांश - 1

इलाहाबाद की किसी सड़क पर काम में लगी एक श्रमिक महिला को देखकर निराला जी ने लिखा है कि वह जहाँ बैठी काम में लगी है, वहाँ कोई छायादार पेड़ भी नहीं है, जो उसे गरमी की प्रखरता से, उसकी तेज़ी से बचा सके। पर उसे इस स्थिति से कोई शिकायत नहीं है, वह तो इस स्थिति को स्वीकार कर रही है। सोचिए क्यों ? क्योंकि वह जानती है कि जब कठिन श्रम करना है तो अनुकूल परिस्थितियों की कल्पना ही व्यर्थ है।

कवि की दृष्टि पहले श्रमिक महिला के शारीरिक रूप-सौंदर्य की ओर जाती है। उसका शरीर साँवला है। वस्तुतः, धूप में काम करने वाले सभी श्रमिकों का रंग धूप में साँवला पड़ ही जाता है। वह युवती है और निरंतर श्रम करने के कारण उसका शरीर सुगठित है यानी देह-रचना सुडौल और सुघड़ है। उसकी झुकी आँखें बड़ी प्यारी लग रही हैं। उसका मन भी काम पर पूर्ण तन्मयता से लगा है। हाथ में भारी हथौड़ा लेकर वह बार-बार पत्थरों पर चोट कर रही है। उन्हें तोड़ रही है।

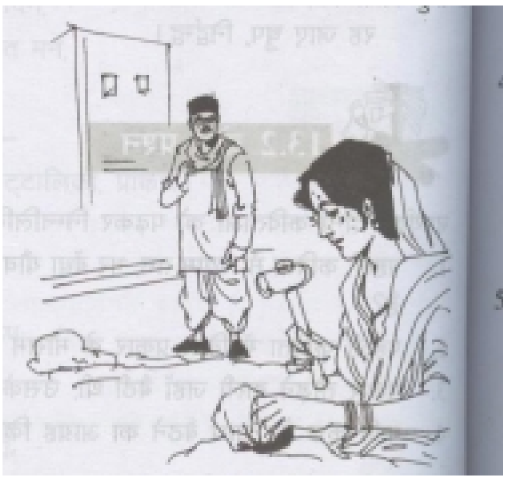

चित्र 13.1

इसके बाद कवि परिवेश की परस्पर विरोधी स्थिति का चित्रण कर रहा है। वह कहता है जहाँ एक ओर वह मज़दूरनी गरमी में छायाहीन वृक्ष के नीचे काम कर रही है – वहीं उसके एकदम सामने के परिवेश से संपन्नता और सुख-सुविधा झलक रही है। वहाँ सुंदर सजावटी वृक्षों की पंक्तियाँ हैं, विशाल ऊँचे भवन हैं और उनके चारों ओर सुंदर दीवारें हैं। कविता की इन पंक्तियों में यह संकेत स्पष्ट है कि वह संभ्रांत नागरिकों की बस्ती है। वे लोग सुख-सुविधाओं के बीच अट्टालिकाओं में परकोटों से घिरे बैठे हैं और आस-पास की परिस्थितियों से बेखबर अपने आप में सिमटे हुए हैं, जबकि उन भवनों का निर्माण करने वालों को मौसम की मार से बचने की सुविधा तक नहीं है।

टिप्पणी

1. उपर्युक्त पंक्तियों में कविता का सामान्य अर्थ बताया गया है। आप जानते हैं कि 'निराला' सिद्ध कवि हैं। वे शब्दों और वर्ण्यवस्तु का चयन विशेष आशय से करते हैं। जैसे इन्हीं पंक्तियों में देखिए : *''कोई न छायादार/पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार श्याम तन, भर बँधा यौवन/नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन''।*

2. आप जानते हैं कि हम सर्वनाम का प्रयोग तब करते हैं जब पहले संज्ञा का प्रयोग कर चुके होते हैं। यहाँ कवि ने कविता का प्रारंभ 'वह' सर्वनाम से किया है, पूरी कविता में 'वह' के लिए कोई नाम भी नहीं है। बता सकते हैं ऐसा क्यों है ? कवि यदि चाहता तो मजदूरनी के लिए कोई नाम भी दे सकता था। पर नाम न देकर वह व्यक्त करना चाहता है कि यह बात किसी एक श्रमिक विशेष पर नहीं, श्रमिक सामान्य पर अर्थात् सभी श्रमिकों पर लागू होती है। किसी भी सड़क के किनारे पत्थर तोड़ने वाली मजदूरनी की कठिनाई और कार्य परिस्थितियाँ एक-सी हैं। इस प्रकार नाम महत्त्वपूर्ण नहीं, महत्त्वपूर्ण है उसका काम– अर्थात् 'पत्थर तोड़ना'। कवि प्रारंभ के वाक्य में ही कहता है – 'वह तोड़ती पत्थर।'

3. यहाँ व्यक्ति का नाम न देने वाला कवि सड़क की पहचान के लिए नाम देता है – *'देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर'।* यहाँ आप पूछ सकते हैं कि नाम न देने से क्या अर्थ अधिक व्यापक नहीं होता ? यहाँ 'पथ पर' के साथ इलाहाबाद नाम देकर उसने इस घटना को सच्चा और प्रामाणिक बताना चाहा है। जैसे कहना चाहता हो 'यह एक सच्ची घटना' है और वह इस घटना का साक्षी है। सभी कुछ उसके सामने हुआ है। यह इलाहाबाद की देखी हुई घटना है।

4. अगले कथन में 'स्वीकार' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए। जहाँ बैठकर वह काम कर रही है, वह जगह छायादार नहीं है। पर उसे यह स्थिति स्वीकार है। यहाँ कवि का आशय है कि मज़दूर जिन परिस्थितियों में काम कर रहे हैं, वे उनके अनुकूल नहीं हैं, प्रतिकूल हैं। पर वे इन प्रतिकूल परिस्थितियों के होते हुए भी कोई बखेड़ा खड़ा नहीं कर रहे हैं, बल्कि उन्हें स्वीकार कर काम करते रहते हैं।

5. अगली दो पंक्तियाँ देखिए :

   श्याम तन, भर बँधा यौवन,
   नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,

   'साँवले रंग का शरीर, बँधे परिपुष्ट अंगों से झलकता यौवन' कथन से स्पष्ट है कि वह श्रमिक महिला सुंदरी है। पर उसकी आँखों में कोई श्रृंगार या उच्छृंखलता का भाव नहीं है। आँखें झुकी हैं, जो उसके शील स्वभाव को व्यंजित कर रही हैं। युवती के प्रसंग में कवि प्रायः उसके प्रिय का उल्लेख करते हैं, जिस पर उसका मन हो। यहाँ भी कवि उसके प्रिय का उल्लेख करता है, पर यह प्रिय कोई व्यक्ति नहीं, वह है कर्म– पत्थर तोड़ने का काम, उसी पर उसका मन है, उसी पर उसकी आँखें। इसलिए कहा है – *'नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन।'*

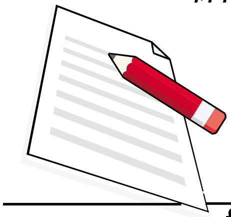

टिप्पणी

6. अब इन तीन पंक्तियों को पढ़िए :

'गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

इसका अर्थ आप पीछे पढ़ चुके हैं। देखना यह है कि इस प्रसंग में कवि उसके सामने तरुमालिका, अट्टालिका और प्राकार का उल्लेख क्यों कर रहा है? निराला ने इस पंक्ति के द्वारा परिवेश की विडंबना को साकार किया है। एक ओर भीषण गरमी में सड़क पर पत्थर तोड़ती औरत और दूसरी ओर सुंदर सजावटी वृक्षों की पंक्तियों से सजे परकोटों से घिरे बड़े-बड़े महल। कवि का उद्देश्य परिवेश के विरोध और विडंबना को साकार करना ही नहीं है, वह कहता है *'गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार-बार प्रहार'*, वह हाथ में भारी हथौड़ा लेकर बार-बार प्रहार कर रही है, पत्थरों पर ही नहीं, बल्कि सामने उन तरुमालिका, अट्टालिका और प्राकारों की सुविधाओं का भोग करने वाले, वहाँ रहने वाले उन सभी लोगों पर और साथ ही साथ उस व्यवस्था पर भी जहाँ शोषित मज़दूर प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करते हैं और शोषक उनसे बेखबर होकर सुख-सुविधाओं में जीते हैं।

पाठगत प्रश्न 13.1

उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि ने मज़दूरनी के लिए 'वह' सर्वनाम का प्रयोग किया है, क्योंकि
   (क) उसका कोई नाम नहीं है।
   (ख) कवि उसका नाम नहीं जानता।
   (ग) वह किसी भी श्रमिक की बात हो सकती है।
   (घ) महिला के लिए 'वह' कहना ही उचित है।
2. पठित पंक्तियों में चित्रण नहीं किया गया है –
   (क) श्रमिक के कठोर श्रम का।
   (ख) काम करने की प्रतिकूल परिस्थितियों का।
   (ग) शोषक और शोषित की जीवन-शैली के अंतर का।
   (घ) युवक-युवती के शारीरिक सौंदर्य के अंतर का।

अंश - 2

आइए, अगली आठ पंक्तियाँ पढ़ कर देखें –

आप जान गए हैं कि इलाहाबाद की किसी सड़क पर तपती दोपहरी में पत्थर तोड़ती महिला के श्रम का चित्रण कवि इस कविता में कर रहा है। इन पंक्तियों में कवि कार्य

टिप्पणी

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रूई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गयीं,
प्रायः हुई दुपहर–
वह तोड़ती पत्थर।

की कठिनतर परिस्थितियों का चित्रण कर रहा है। दोपहर में धूप बढ़ने लगी है। गर्मियों के दिन हैं और तमतमाता सूर्य अपनी प्रचंड गरमी से सबको व्याकुल कर रहा है। यहाँ तमतमाता रूप प्रत्यक्ष में तो दिन का है पर इसे मजदूरनी के तमतमाए चेहरे से भी जोड़ा गया है। ज़रा सोचिए, गरमी के दिनों में क्या हाल होता है। गरम लू के थपेड़े तो मानो मनुष्य को झुलसा देते हैं। कवि कहता है कि इस समय धरती ऐसे तप रही है जैसे रूई अंदर ही अंदर धीरे-धीरे सुलगती जाती है। चारों ओर धूल का गुबार-सा छा गया है। गर्द का एक-एक कण चिंगारी सा जलने लगा है। अब तो दोपहर हो आई है। दोपहर में गरमी अपने चरम पर होती है। ऐसे में भी वह मज़दूरनी सिर नीचा करके पत्थर तोड़ने के कार्य में लगी हुई है।

टिप्पणी

1. इन पंक्तियों में 'निराला' के शब्दचयन पर ध्यान दीजिए। इस प्रसंग को वह *'चढ़ रही थी धूप'* कथन से प्रारंभ करते हैं। धूप का धीरे-धीरे चढ़ना, अंततः उसका दोपहर तक पहुँचना है – *'प्रायः हुई दुपहर'*। यहाँ 'प्रायः' का प्रयोग देखिए, दीन-श्रमिकों के पास समय मापने के कोई निश्चित उपकरण नहीं होते। धीरे-धीरे चढ़ती-बढ़ती धूप जब इतनी बढ़ जाए कि धरती जलने लगे, धूप के थपेड़े असह्य हो जाएँ। गर्द-गुबार उड़ने लगे तो उन्हें लगता है कि लगभग मध्याह्न हो गया।
2. *'रूई ज्यों जलती हुई भू'* में उपमा बड़ी बेजोड़ है। रूई में लगी आग की लपटें दिखती नहीं हैं। वह धीरे-धीरे भीतर-ही-भीतर सुलगती है। धरती का भी यही हाल है। शुरू में ऐसा लगता है कि रूई में कोई आग नहीं है और न ही लपटें उठती दिखती हैं, पर गरमी की अधिकता से पता चलता है कि आग लगी हुई है।
3. ऐसा ही प्रयोग है – *'गर्द चिनगीं'*। दोपहर इतनी गरम हो जाती है कि धूल का एक-एक कण आग की चिंगारी-सा जान पड़ता है। ऐसी चिंगारियों की गर्द पूरे आसमान में छा गई है। इस प्रकार पूरे अवतरण में गरमी की प्रचंडता को अनेक प्रकार से साकार किया गया है।

पाठगत प्रश्न 13.2

उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'दिवा का तमतमाता रूप' कथन से आशय है :
   (क) दिया जगमगा रहा था।
   (ख) मजदूर क्रोध से तमतमा रहे थे।
   (ग) जगमगाता दिन बहुत सुंदर लग रहा था।
   (घ) सूर्य मानो आग बरसा रहा था।
2. 'रूई ज्यों जलती हुई भू' का आशय है :
   (क) धरती पर आग लगी थी।
   (ख) रूई धीरे-धीरे जल रही थी।
   (ग) असहनीय गरमी पड़ रही थी।
   (घ) धरती मानो सुलग रही थी।

टिप्पणी

देखते देखा मुझे तो एक बार उस भवन
की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस द ष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा–
'मैं तोड़ती पत्थर'।

अंश - 3

अब कविता की शेष पंक्तियाँ पुनः पढ़ लीजिए।

व्याख्या

कवि मजदूरनी को दोपहर की भीषण गरमी में काम करते हुए देख रहा था। अब मज़दूरनी ने भी देखा कि कोई उसे देख रहा है। उसे देखते हुए देखकर, उसने सामने की अट्टालिका को देखा और देखने में उसका काम करने का क्रम थोड़ा-सा विचलित हुआ। पर उसके मन में दीनता या ईर्ष्या जैसी कोई भावना नहीं उपजी। उसने कवि को ऐसी दृष्टि से देखा जिसने आतंक को सहा है, पर रोकर अपनी दीनता कभी प्रकट नहीं की। कवि को लगता है कि सितार को बजाने पर भी जो झंकार मैंने कभी नहीं सुनी थी, ऐसी झंकार मुझे उस मज़दूरनी के श्रम और उसकी स्वाभिमानी दृष्टि से सुनाई पड़ी। पलभर उसका हाथ रुक जाने पर वह सुडौल युवती काँपी, उसके माथे से पसीने की कुछ बूँदें टपक पड़ीं। इसके बाद वह पुनः काम में लग गई। उसके पुनः काम प्रारंभ करने के अंदाज़ से कवि को लगा मानो वह कह रही हो कि वह पत्थर तोड़ती है यहाँ 'मैं तोड़ती पत्थर' का व्यंग्यार्थ यह भी है कि मैं पत्थर जैसी हृदयहीन सामाजिक व्यवस्था को तोड़ना चाहती हूँ।

टिप्पणी

1. इस पूरे प्रसंग की विशेषताओं पर आपने गौर किया होगा। इसमें बिना संवादों के भी संवादात्मकता है। केवल आँखों से ही भावों और विचारों को अभिव्यक्त किया जा रहा है। पहले कवि मज़दूरनी को देखता है, मज़दूरनी कवि को देखती है और उसके बाद उस भवन की ओर देखती है। पुनः वह कवि की ओर स्वाभिमान और अपराजेयता के भाव से देखती है। इस प्रकार, देखने का मौन ही मुखरित हुआ है। वीणा की झंकार की कल्पना भी कवि ही कर रहा है। मज़दूरनी का टूटा हृदय ही 'छिन्नतार' है। अंत में मज़दूरनी का मौन संवाद ही मुखरित हुआ है, कवि को लगता है, जैसे वह कह रही हो – *'मैं तोड़ती पत्थर'*।
2. कविता के प्रारंभ में कथन था – 'वह तोड़ती पत्थर', समाप्ति में है – 'मैं तोड़ती पत्थर' क्या इन दोनों प्रयोगों का कोई रहस्य है? हाँ, है। प्रारंभ में 'वह' सर्वनाम सामान्य मज़दूर वर्ग के लिए है और कथन कवि का है। पर अंत में 'वह' 'मैं' में बदल गया है। जो मज़दूर सामान्य का नहीं 'विशेष' का द्योतक है, ऐसे मज़दूर का जिसे सामाजिक विषमताओं का बोध है और अपने कर्तव्य तथा लक्ष्य का ज्ञान है। पत्थर पर हथौड़ा चलाते हुए मजदूरनी कहती है – *'मैं तोड़ती पत्थर'* अर्थात् ''मैं प्रत्यक्ष में तो सड़क के किनारे पड़े पत्थर तोड़ रही हूँ। पर 'मैं' परोक्ष रूप से संवेदनशील समाज की विषमताओं को सह रहे अपने हृदय रूपी पत्थर को भी तोड़ रही हूँ और इस हृदयहीन पत्थर-दिल सामाजिक व्यवस्था को भी तोड़ सकती हूँ।

पाठगत प्रश्न 13.3

उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिएः

1. 'देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं' कथन से मजदूरनी के स्वभाव

की कौन-सी विशेषता अभिव्यक्त हो रही है –

(क) दीनता (ख) सहिष्णुता (ग) स्वाभिमान (घ) पराधीनता।

2. कवि और मज़दूरनी आपस में बातें करते से क्यों प्रतीत हो रहे हैं?

क्रियाकलाप 13.2

यह सच है कि हम अपने विचारों और भावनाओं को भाषा द्वारा अभिव्यक्त करते हैं, पर मौन का बड़ा महत्त्व माना गया है। हमें जब गहन समस्याओं पर चिंतन करना होता है, तब वाणी को विराम देकर मौन का सहारा लेते हैं। कहा भी गया है कि speech is silver, silence is gold वाणी भाषण चाँदी-सी मूल्यवान है, तो मौन सोने-सा है। क्या आप बता सकते हैं कि आत्मान्वेषण के लिए कौन-सी स्थिति उपयुक्त है और क्यों?

....

....

....

....

2. 'मौन' कविता

आइए, अब दूसरी कविता 'मौन' पर विचार करें। पहले आप इस कविता का एक बार फिर से पाठ कर लीजिए।

बैठ लें कुछ देर,
आओ, एक पथ के पथिक से
प्रिय, अन्त और अनन्त के,
तम-गहन-जीवन घेर।
मौन मधु हो जाय
भाषा मूकता की आड़ में,
मन सरलता की बाढ़ में
जल-बिंदु-सा बह जाय।
सरल, अति स्वच्छन्द
जीवन, प्रात के लघु-पात से
उत्थान-पतनाघात से
रह जाए चुप, निर्द्वन्द्व।

संदर्भ

'मौन' शीर्षक कविता के रचयिता छायावाद के प्रमुख कवि निराला हैं। यह निराला ग्रंथावली भाग–2 में संकलित कविता है।

प्रसंग

प्रस्तुत कविता में एक व्यक्ति अपने प्रियतम से कुछ क्षण शांति से मौन रहकर व्यतीत करने का आग्रह कर रहा है।

व्याख्या

कविता को ठीक से समझने के लिए आइए सबसे पहले विचार करते हैं कि कविता किसे संबोधित है। इसमें कवि ने संबोधन किया है – 'प्रिय'। यह प्रिय कौन हो सकता है ? पूरा कथन है – 'एक पथ के पथिक से, प्रिय' अर्थात् प्रिय और संबोधित करने वाला मानो एक राह के राही हैं, सहयात्री हैं। ये दोनों मित्र भी हो सकते हैं और दो प्रेमी भी। महत्त्वपूर्ण यह है कि दोनों समान परिस्थितियों में जीवनयात्रा कर रहे हैं। प्रस्तुत कविता में अपने प्रियपात्र से कहा गया है – 'हे प्रिय, आओ दोनों कुछ देर के लिए बैठ लें। जीवन तो निरंतर गतिशील है। उस गतिशीलता में कुछ पल बैठकर स्वयं को विराम दें। हम दोनों एक ही जीवन मार्ग के पथिक हैं, अतः इस जीवन के क्षणिक और स्थायी कष्टों और अंधकारों को घेरकर कुछ देर बैठ लें। यहाँ कवि ने 'तम-गहन-जीवन घेर' क्यों कहा ? उसे घेरकर बैठने की चाह में जीवन यात्रा को याद करने की चाह छिपी है। कवि चाहता है कि दोनों चुपचाप बैठे रहें। घेर में यह व्यंजना

है – आओ, जीवन के गहरे अँधेरे को, असफलताओं को घेर कर बैठें। उन पर चुपचाप मनन करें। आप जानते हैं कि भाषा की एक सीमा होती है। परंतु मौन की शक्ति असीम होती है। क्या प्रत्येक बात बोलकर समझाई जा सकती है ? नहीं, कुछ बातें अनकही अधिक स्पष्ट होती हैं। बिहारी ने भी तो कहा है – *'कहिहै अब तेरो हियो, मेरे हिय की बात'*। इसलिए मौन रहकर वह सब भी समझा जा सकता है, जिसे भाषा नहीं समझा पाती। मौन मधु-सा मीठा कब हो सकता है ? एक दूसरे के भावों को कैसे समझा जा सकता है? मन की उपमा किससे दी गई है ? जैसे बूँदें नदी में चुपचाप बह जाती हैं, वैसे ही हमारा मन जीवन के विशाल प्रवाह में बूँदों-सा चुपचाप बह जाए। हमारा जीवन कैसा हो ? सरल और बंधनों से मुक्त हो, अपने वश में हो। वह उत्थान और पतन की चोटों को ऐसी सरलता से सह जाए जैसे प्रातःकाल की वायु से छोटे-छोटे पत्ते कभी ऊपर कभी नीचे होते रहते हैं और झोंकों को चुपचाप सहते रहते हैं अर्थात् हिलते-डोलते दिखाई देते हैं। ऐसे ही हम जीवन के उतार–चढ़ावों को झेलते हुए भी निर्द्वन्द्व यानी तनाव मुक्त बने रहें। निर्द्वन्द्व होना किसे कहते हैं? न सुख में इतराए, न दुख में घबराए। दोनों स्थितियों में अंतर न रहना ही निर्द्वन्द्व होना है। कवि ऐसे ही निर्द्वन्द्व जीवन की कामना कर रहा है। क्यों ? क्योंकि तभी जीवन बंधनों से मुक्त होकर स्वच्छंद हो सकेगा।

टिप्पणी

1. कवि के इन भाषा प्रयोगों पर ध्यान दीजिए। *'बैठ लें कुछ देर'* में कवि ने 'कुछ देर' पर अधिक बल दिया है। जीवन की भाग-दौड़ और आपाधापी में कुछ देर मौन बैठकर चिंतन करना, जीवन यात्रा के लिए स्फूर्ति दे सकता है।
2. 'आओ' में बड़ा ही स्पष्ट और अनौपचारिक आग्रह है। अंतरंगता और निकटता में ही इस क्रियापद का प्रयोग होता है। यहाँ भी 'आओ' के बाद *'एक पथ के पथिक से'* कहकर वह अंतरंगता उजागर कर दी गई है।
3. 'मौन' के 'मधु' हो जाने की कल्पना भी बेजोड़ है। मधु की मिठास वाणी से बताई जाती है। कवि उस मधु का अनुभव करने को तो कहता है, पर भाषा को चुप्पी की आड़ में कर देना चाहता है। ऐसी ही स्थिति को सूरदास ने कहा था – *'ज्यों गूँगेहि मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै'*।
4. 'सरलता की बाढ़' प्रयोग भी दर्शनीय है। मन में असरलता, कटुता हो तो जीवन दूभर हो जाता है। सरलता की अधिकता के लिए उसने 'सरलता की बाढ़' कहा है। 'सरलता की बाढ़' आएगी तो मन उसमें बूँदों-सा बह जाएगा।
5. अगले वाक्य में कवि पुनः सरल शब्दों का प्रयोग करता है। यहाँ ये पंक्तियाँ जीवन का विशेषण बनकर सामने आई हैं। ऐसा सरल जीवन उत्थान और पतन को भी सरलता से झेल सकेगा। झेलेगा ही नहीं, ऐसी स्थितियों में वह शांत और स्थिर भी बना रहेगा।

पाठगत प्रश्न 13.4

उपयुक्त विकल्प चुनकर नीचे दिए प्रश्न का उत्तर दीजिए:

1. 'मौन मधु हो जाए' कथन का आशय है–

(क) मौन होकर मधु पिया जाए।

(ख) मौन और मधु दोनों मीठे होते हैं।

(ग) मौन बैठे रहने में बड़ा लाभ है।

(घ) मौन मधु-सा आनंद दे सके।

2. 'मन सरलता की बाढ़ में' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

13.4 भाव सौंदर्य

1. वह तोड़ती पत्थर

'वह तोड़ती पत्थर' कविता भाव सौंदर्य की दृष्टि से बहुत संपन्न है। सड़क पर गिट्टी तोड़ती मज़दूरनी का वर्णन करते हुए कवि सरल शब्दों से परिवेश का निर्माण करता है। वह छायाहीन पेड़ तले बैठी है। उसकी पृष्ठभूमि साधारण श्रमिक परिवार की है, किंतु शील और सच्चरित्रता जैसे चारित्रिक गुणों को दिखाना भी कवि नहीं भूला है। मज़दूर और संपन्न दोनों प्रकार के लोगों का चित्रण करते हुए कवि ने परस्पर विरोधी चित्र खींचे हैं। एक ओर कठिनतम परिस्थितियों में काम करते श्रमिक वर्ग का चित्र है तो दूसरी ओर सुख-सुविधा संपन्न भवनों में रहने वाले लोगों का। कवि की सहज सहानुभूति श्रमिक वर्ग के साथ है। वह श्रमिक-वर्ग के हाथों हृदयहीन व्यवस्था को ध्वस्त होते देखने की कामना रखता है।

2. मौन

'मौन' शीर्षक कविता में बहुत थोड़े शब्दों में जीवन में मौन के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है। जीवन की आपाधापी से कुछ क्षण निकाल कर वाणी को विराम देने और मौन की मिठास का अनुभव करने का आग्रह कवि अपने साथी से कर रहा है। कवि का विश्वास है कि जीवन में सरलता होनी चाहिए। जीवन सरल हो तो उत्थान और पतन दोनों के आवेगों को सरलता से झेला जा सकता है।

13.5 शिल्प सौंदर्य

शैली और शिल्प-सौंदर्य की दृष्टि से निराला की प्रस्तुत दोनों रचनाएँ बेजोड़ हैं।

'मैं तोड़ती पत्थर' प्रगतिवादी रचना है। शिल्प सौंदर्य की दृष्टि से यह रचना अद्‌भुत है। सर्वप्रथम तो कविता के छंद पर ध्यान दीजिए। परंपरागत छंदों में मात्रा और वर्ण का निश्चित विधान होता है, पर निराला की अनेक कविताओं में ऐसा बंधन नहीं है। इसे 'मुक्त छंद' कहते हैं। कविता को छंद के बंधन से मुक्त करने में निराला का बड़ा योगदान है। 'वह तोड़ती पत्थर' में तुकांतता है। तुक पंक्तियों के अंत में ही नहीं भीतर भी है, पर उसका बंधन नहीं है, पंक्तियाँ छोटी-बड़ी हैं, पर उनमें प्रवाह है, जैसे –

1. *श्याम तन, भर बँधा यौवन*
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन
गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार-बार प्रहार

2. *चढ़ रही है धूप*
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप।

कवि शब्दों के द्वारा पाठक के सामने एक-चित्र-सा खींच देता है, जैसे –

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय कर्म-रत मन,

गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरुमालिका, अट्टालिका, प्राकार।

शब्द प्रयोग में भी कवि ने बड़ी कुशलता का परिचय दिया है। कम शब्दों से अधिक गूढ़ अर्थ का संकेत करना निराला की विशेषता है। जैसे, *'देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं', 'मैं तोड़ती पत्थर', 'मौन मधु हो जाए'* आदि ऐसे ही प्रयोग हैं। निराला जिस युग में कविता कर रहे थे, उसमें प्रायः संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के प्रयोग का चलन-सा हो गया था। प्रसाद, पंत, महादेवी आदि की भाषा तत्सम प्रधान है, पर निराला का भाषा पर ऐसा अधिकार है कि वे संस्कृतनिष्ठ और सरल हिंदी के शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार कर लेते हैं। 'मौन' कविता में तत्सम शब्दों की प्रधानता है पर 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की भाषा बड़ी ही सरल और बोलचाल की है। परंतु इसमें भी कवि जहाँ उन लोगों की बात करता है, जो समाज की सुख-सुविधाएँ भोग रहे हैं, तब वह तत्सम शब्दावली का प्रयोग करता है – तरुमालिका, अट्टालिका, प्राकार।

'मौन' कविता एक गीत है। इसमें छायावादी शिल्पविधान है और कवि की मौलिक कल्पना बड़ी अनूठी है। आगे दी गई पंक्तियाँ पढ़िए :

मौन मधु हो जाय
भाषा मूकता की आड़ में,
मन सरलता की बाढ़ में
जल-बिंदु–सा बह जाय।

इन पंक्तियों में छोटे-छोटे पदों और वाक्यांशों का प्रयोग हुआ है। छंद छोटा है और उसमें गीतात्मकता भी है। इसमें कवि ने मानो मौन का वातावरण अधिक सघन बनाने का प्रयास किया है।

पाठगत प्रश्न 13.5

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में शोषित और शोषक वर्ग में से कवि की सहानुभूति किसके साथ है?
2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता छंद की दृष्टि से किस तरह की है?
3. 'मौन' कविता के शिल्प की विशेषता है –
   (क) स्वच्छंदता (ग) गीतात्मकता
   (ख) मुक्तछंदता (घ) संवादात्मकता

13.6 आइए, स्वयं पढ़ें

अभी आपने निराला की कविताएँ पढ़ीं। उन्हें समझा। अब इससे मिलती-जुलती एक और कविता पढ़िए –

मेरे आँगन में, (टीले पर है मेरा घर)
दो छोटे – से लड़के आ जाते हैं अकसर!

नंगे तन, गदबदे, साँवले, सहज छबीले,
मिट्टी के मटमैले पुतले, – पर फुर्तीले !

चित्र 13.3

जल्दी से, टीले के नीचे, उधर, उतरकर
वे चुन ले जाते कूड़े से निधियाँ सुंदर, –
सिगरेट के खाली डिब्बे, पन्नी चमकीली,
फीतों के टुकड़े, तस्वीरें नीली पीली

मासिक पत्रों के कवरों की; औ' बंदर से
किलकारी भरते हैं, खुश हो – हो अंदर से !
दौड़ पार आँगन के फिर हो जाते ओझल
वे नोट छह सात साल के लड़के मांसल !

सुंदर लगती नग्न देह, मोहती नयन-मन
मानव के नाते उर में भरता अपनापन !
मानव के बालक हैं ये पासी के बच्चे,
रोम रोम मानव, साँचे में ढाले सच्चे !

अस्थि माँस के इन जीवों का ही यह जग घर,
आत्मा का अधिवासन न यह, – वह सूक्ष्म, अनश्वर !
न्योछावर है आत्मा नश्वर रक्त मांस पर,
जग का अधिकारी है वह, जो है दुर्बलतर !

वह्नि, बाढ़, उल्का, झंझा की भीषण भू पर
कैसे रह सकता है कोमल मनुज कलेवर ?
निष्ठुर है जड़ प्रकृति, सहज भंगुर जीवित जन,
मानव को चाहिए यहाँ मनुजोचित साधन !

क्यों न एक हो मानव मानव सभी परस्पर
मानवता निर्माण करें जग में लोकोत्तर ?
जीवन का प्रासाद उठे भूपर गौरवमय,
मानव का साम्राज्य बने, – मानव हित निश्चय !

कविता पढ़ने के बाद आपको कैसा लगा? मन में किस तरह की भावनाएँ जागीं? क्या आप इसकी व्याख्या कर सकते हैं? ज़रूर कर सकते हैं। आइए आपकी सहजता के लिए कविता के मुख्य बिंदु बता देते हैं।

कविता में कूड़ा बीनने वाले बच्चों को माध्यम बनाया गया है। आपने भी अपने आसपास ऐसे बच्चों को देखा होगा। ज़रा याद कीजिए वे किस तरह काम करते हैं?

कूड़ा बीनते समय वे सिगरेट के खाली डिब्बे, पन्नियाँ, तस्वीरें आदि चुनते रहते हैं। कभी-कभार अगर किसी पत्रिका के कवर पर छपी कोई फोटो दिख जाती है तो उसे देखकर हँसने लगते हैं, खुश हो जाते हैं। मानवता के नाते कवि के मन में उनके शरीर और काम करने के तरीके से तनाव पैदा हो जाता है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?

कवि इन बच्चों के माध्यम से संदेश देता है कि विश्व के सभी मानव एक समान ही हाड़-माँस से बने हैं। उनमें कोई अंतर नहीं है, लेकिन साधन और सुविधाओं के आधार पर उनमें भेद पैदा हो जाता है। कवि के अनुसार यह अनुचित है। वह सभी मनुष्यों में आपसी एकता की बात करता है कहता है कि इस दुनिया में मानव कल्याण का साम्राज्य होना चाहिए।

उम्मीद है आप कविता के निहितार्थों को समझ गए होंगे। अब आप इसकी व्याख्या स्वयं कर सकते हैं। तो देर किस बात की है कर डालिए न!

पाठगत प्रश्न 13.6

उचित विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कूड़ा बीनने वाले बच्चे खुश कब होते हैं?
   (क) कभी भी
   (ख) पत्रिका के कवर की तस्वीर देखकर
   (ग) पन्नियाँ बीनने के बाद
   (घ) टीले से नीचे उतरने के बाद
2. कवि दुनिया में कैसी व्यवस्था की बात करता है?
   (क) जनतांत्रिक (ग) मानवतावादी
   (ख) गणतांत्रिक (घ) सर्वसत्तावादी

13.7 आपने क्या सीखा

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने मज़दूरनी के माध्यम से शोषक और शोषितों के जीवन की विषमता का चित्रण किया है, तो 'मौन' कविता प्रेमी युगल के संदर्भ से मौन का महत्त्व समझाती है।
2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने बताया है कि मजदूर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मन लगाकर काम करते हैं, पर उन्हें शोषकों के अत्याचारों और विषमताओं का बोध है। वे स्वाभिमान से जीना चाहते हैं और यह क्षमता भी रखते हैं कि वे अपने हथौड़े से इस पत्थर-दिल व्यवस्था को भी छिन्न-भिन्न कर सकें।
3. 'मौन' कविता में कवि कुछ क्षणों के लिए अपने प्रिय के साथ एकांत में चुपचाप बैठना चाहता है। ऐसे में मौन ही मधु-सा मीठा लगने लगता है। वाणी मूक हो जाती है और मन प्रवाह के साथ पानी की बूँद-सा बहने लगता है।
4. भाव और भाषा की दृष्टि से दोनों रचनाएँ बेजोड़ हैं। 'मौन' कविता में छायावादी विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं और 'वह तोड़ती पत्थर' में प्रगतिवादी। दोनों कविताओं में शब्दों का बड़ा ही प्रासंगिक प्रयोग दिखाई पड़ता है।

13.8 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1397 में तत्कालीन बंगाल के मेदिनीपुर जिले के एक छोटे राज्य में हुआ था, जिसका नाम था – महिषादल। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। कुछ ही वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद उनकी पत्नी का निधन हो गया। परिवार में और भी अनेक संकट आए। कविता लिखने की उनकी शैली नई थी और संपादक प्रारंभ में उनकी कविता छापते नहीं थे। अतः उनके जीवन में आर्थिक अभाव भी बने रहे। निराला संस्कृत, बंगला और अंग्रेज़ी भाषा के ज्ञाता थे तथा संगीत और दर्शन में भी उनकी रुचि थी। वे रूढ़ियों के विरोधी थे। उन्होंने हिंदी कविता को नया जीवन और नया मार्ग दिया। 'परिमल', 'अनामिका', 'तुलसीदास', 'नये पत्ते, 'राम की शक्ति पूजा', 'गीतिका' आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। सन् 1961 में उनका निधन हो गया।

पुस्तकालय से निराला की कुछ पुस्तकें प्राप्त कर पढ़िए।

13.9 पाठांत प्रश्न

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता का मुख्य प्रतिपाद्य क्या है ?
2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर शोषक और शोषित के जीवन का अंतर बताइए।
3. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर ग्रीष्म ऋतु की भीषणता का वर्णन कीजिए।
4. 'मौन' कविता का केंद्रीय भाव बताइए।
5. 'मौन' कविता के आधार पर बताइए कि निर्द्वन्द्व जीवन के लिए कवि किस स्थिति की कामना कर रहा है?
6. भाव स्पष्ट कीजिए :

   (क) श्याम तन, भर बँधा यौवन,
   नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
   गुरु हथौड़ा हाथ,
   करती बार-बार प्रहार,
   सामने तरु-मालिका, अट्टालिका, प्राकार।

   (ख) देखकर कोई नहीं,
   देखा मुझे उस दृष्टि से
   जो मार खा रोई नहीं।

   (ग) मौन मधु हो जाय
   भाषा मूकता की आड़ में,
   मन सरलता की बाढ़ में
   जल-बिंदु-सा बह जाय।

टिप्पणी

(घ) सरल, अति स्वच्छन्द
जीवन, प्रात के लघु-पात से
उत्थान-पतनाघात से
रह जाए चुप, निर्द्वन्द्व।

7. पठित कविताओं के आधार पर निराला की शैली और शिल्प सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

8. निम्न काव्य पंक्तियों को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

न बोलने पर भी
मैं सुनता हूँ तुम्हारे बोल
तुम्हारी बोलती आँखों से
सो मुझे
प्यार से पुकारतीं –
और मौन ही निहारती हैं।

(क) कविता का मूल आशय क्या है?

(ख) कवि ने कविता में किसके महत्त्व पर प्रकाश डाला है?

(ग) आँखों के बोलने से कवि का क्या आशय है?

(घ) इस काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

13.8 उत्तरमाला

13.2 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. पत्थर तोड़ती हुई मज़दूरनी की
2. तमतमाती गरमी का
3. सुंदर अट्टालिकाएँ, भवन आदि।
4. अपने प्रिय साथी से।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1 1. (ग) 1. (घ)

13.2 1. (घ) 2. (ग)

13.3 1. (ग) 2. स्वयं लिखिए

13.4 1 (घ) 2. व्यवहार में बहुत अधिक सरल बनाना

13.5 1. शोषित वर्ग के साथ
2. मुक्त छंद कविता
3. (ग)

13.6 स्वयं कीजिए